अण्डमान निकोबार
द्वीप समाचार
संख्या 341 श्री विजय पुरम, गुरूवार, 18 दिसंबर 2025 web: dt.andaman

फसल संरक्षण और पोषक तत्व प्रबंधन के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर प्रशिक्षण सम्पन्न

श्री विजय पुरम, 17 दिसम्बर।

केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान में 11 से 17 दिसंबर, 2025 तक "प्राकृतिक खेती, जैविक खेती और एकीकृत कृषि प्रणालियों में फसल संरक्षण और पोषक तत्व प्रबंधन के वैज्ञानिक दृष्टिकोण" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन तकनीकी कर्मचारियों और प्रतिभागियों के ज्ञान और व्यावहारिक कौशल को बढ़ाने के उद्देश्य से किया गया था, जो विशेष रूप से अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की कृषि–पारिस्थितिक स्थितियों के अनुकूल रसायन मुक्त, टिकाऊ और वैज्ञानिक रूप से मान्य कृषि प्रथाओं पर केंद्रित था।

प्रशिक्षण में प्राकृतिक खेती, जैविक खेती और एकीकृत कृषि प्रणालियों के महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल किया गया, जिसमें वैज्ञानिक कीट और रोग प्रबंधन, पोषक तत्व प्रबंधन और ऑन–फार्म संसाधन पुनर्चक्रण पर ज़ोर दिया गया। प्रतिभागियों को जीवामृत, बीजामृत, घन जीवामृत, वर्मीकम्पोस्ट, वानस्पतिक अर्क, ट्राइकोडर्मा और स्यूडोमोनास जैसे माइक्रोबियल बायोएजेंट्स के उपयोग और अन्य पर्यावरण के अनुकूल फसल संरक्षण प्रथाओं के सृजन और अनुप्रयोग पर प्रशिक्षित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. जय सुंदर ने किया, जिन्होंने द्वीपीय कृषि के लिए टिकाऊ और जलवायु–लचीली खेती प्रथाओं को अपनाने के महत्व पर प्रकाश डाला। नोडल अधिकारी डॉ. आर. किरुबा शंकर ने केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान में मानव संसाधनों को मजबूत करने में क्षमता और कौशल विकास की भूमिका पर ज़ोर दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय डॉ. आई. जयशंकर, डॉ. वाई. रामकृष्ण, डॉ. अभिलाष और डॉ. प्रभु ने किया, जिन्होंने पाठ्यक्रम निदेशकों के रूप में संयुक्त रूप से कार्यक्रम की योजना और निष्पादन का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम के दौरान, डॉ. आई. जयशंकर ने प्राकृतिक और जैविक खेती के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को मजबूत करने में प्रशिक्षण के उद्देश्यों और प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला, जबकि डॉ. वाई. रामकृष्ण ने क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम संरचना और प्रशिक्षण मॉड्यूल के बारे में बताया। पूरा कार्यक्रम प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन प्रभाग और कृषि विज्ञान केंद्र, सीपीघाट, दक्षिण अण्डमान के संसाधन व्यक्तियों के सहयोग से आयोजित किया गया था। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार पूर्व और पश्च्य मूल्यांकन परिणामों ने प्रतिभागियों के ज्ञान के स्तर में महत्वपूर्ण सुधार दिखाया, जो प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रभावशीलता को दर्शाता है। प्रतिभागियों की सकारात्मक प्रतिक्रिया के साथ प्रशिक्षण का समापन हुआ, जिन्होंने व्यावहारिक प्रदर्शनों और क्षेत्र–उन्मुख दृष्टिकोण की सराहना की। "प्रा.तिक खेती, जैविक खेती एवं एकीकृत कृषि प्रणाली में फसल संरक्षण एवं पोषक तत्व प्रबंधन हेतु आवश्यक आदान" नामक एक प्रशिक्षण मैनुअल जारी किया गया और भविष्य के अनुप्रयोग के लिए क्षेत्र–स्तरीय संदर्भ के रूप में प्रतिभागियों को प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम ने टिकाऊ, कम लागत वाली और पर्यावरण के अनुकूल कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने और प्राकृतिक व जैविक खेती प्रणालियों को अपनाने में किसानों का समर्थन करने के लिए तकनीकी कर्मचारियों की क्षमता को मजबूत करने में योगदान दिया।